श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-नई दिल्ली (स्थापित सन् 1906)
का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

सन् 1913 से निरंतर प्रकाशित होने वाला स्थानकवासी जैन परंपरा का प्राचीनतम् गौरवशाली समाचार पत्र

जैन प्रकाश सम्पादकीय कार्यालय
जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-01
Tel.: 011-23363729, 23365420 Mob.: 9019731906
E-mail : aissjc1906@gmail.com
Website : https://jainconference.org

सम्पादक : डॉ. अमित जैन, बड़ौत
Mob. 9837394448, 9997889995
E-mail : amitraijain78@gmail.com

श्रमण संघीय प्रथम पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी म.

श्रमण संघीय द्वितीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म.

श्रमण संघीय तृतीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.

श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.

सितम्बर - तृतीय, अंक - 27 विक्रम संवत् - 2083 वीर संवत् - 2552 ईस्वी सन् - 2026

Address
Here

शिव संदेश

श्रद्धा : धर्म का धरातल

- युग प्रधान आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

श्रद्धा परम दुर्लभ है। दुर्लभ का अर्थ है जिसे प्राप्त करना सहज, सरल न हो। श्रद्धा एक ऐसा तत्त्व है जिसे जीवन में प्राप्त करना परम दुर्लभ है। और सब कुछ प्राप्त कर लेना सुलभ है, धन-दौलत, परिवार, ऐश्वर्य, सम्मान सब सुलभ है, पर जीवन में श्रद्धा का अवतरण अत्यंत कठिन बात है। परम और अनन्य घटना है जीवन के तल पर श्रद्धा का उतर आना। क्यों? क्योंकि श्रद्धा अनंत-जीवन यात्रा में अन्यतम घटना है। परम घटना है।

हमारी जीवन-यात्रा का प्रारंभ इसी शरीर के साथ नहीं हुआ है। विचार कर लेना इस तथ्य पर। वर्तमान जन्म हमारा प्रथम जन्म नहीं है। इस जन्म से पूर्व भी हम विद्यमान थे। जैनागमों की भाषा में कहूं तो अनंत अतीत में ऐसा कोई क्षण नहीं था जब हम मौजूद न थे। हम सदा से हैं। हमारा आत्मा सदा सनातन है। अनन्त अनादि काल से वह इस संसार में भटक रहा है। जन्म, जरा और मृत्यु के दुर्लंघ्य कानन में वह विभ्रमित बना भटक रहा है। हम भटकते रहे है आज तक। क्यों भटकते रहे हैं? क्योंकि हमारी आंखें बंद हैं। आंख का बंद होना ही हमारे भटकाव का कारण रहा है। वह आंख क्या है? वह आंख है-श्रद्धा।

बंद आंख के साथ व्यक्ति भटक ही सकता है, अपनी मंजिल पर नहीं पहुंच सकता है। बंद आंख वाला व्यक्ति त्रिकाल में अपनी मंजिल पर नहीं पहुंच सकता है। क्योंकि मंजिल का उसे ज्ञान ही नहीं होता है। तट पर पहुंचकर भी वह पुनः धार में लौट जाता है। क्योंकि तट और धार के अंतर को पहचानने वाली उसकी आंख बंद है। इसलिए हम अनेक बार तट के निकट आकर भी पुनः धार में बहे हैं। ऐसा नहीं है कि अतीत में हमें मानव जीवन न मिला हो, ऐसा भी नहीं है कि हमें धर्म श्रवण का अवसर न मिला हो और ऐसा भी नहीं है कि हमने कभी सामायिक, संवर, पौषधादि न किए हों। यह सब हमने अनेक बार किया है। आगमों में उल्लेख है कि हमने अनंत-अनंत बार मानव देह को प्राप्त किया है, अनंत-अनंत बार हमने संयम-पथ पर कदम भी बढ़ाए हैं। यह सब किया है पर हमारे भटकाव का अंत नहीं हुआ। हमारे द्वारा ग्रहण किए गए रजोहरणों और मुख वस्त्रिकाओं को संगृहीत किया जाए तो सुमेरू पर्वत से भी बड़ा पर्वत निर्मित हो जाए। पर हम प्रत्येक बार भटक गए। जीवन में कितने ही क्षण आए कि हम तीर्थंकरों की सभा में भी मौजूद रहे। पर हमारे भटकाव का अंत न हुआ।

अध्यक्षीय

संवत्सरी : क्षमा, आत्मशुद्धि और जागरण का महापर्व

- अतुल जैन - राष्ट्रीय अध्यक्ष E-mail : ajvk1973@gmail.com

प्रिय समाजबंधुओं,

संवत्सरी महापर्व जैन जीवन का वह पावन अवसर है, जब हम बाहरी संसार से कुछ समय के लिए स्वयं को हटाकर अपने अंतर्मन की ओर देखते हैं। यह केवल क्षमा माँगने और क्षमा करने का पर्व नहीं, बल्कि आत्मनिरीक्षण, प्रायश्चित, समता और आत्मशुद्धि का महापर्व है।

वर्षभर में जाने-अनजाने हमारे मन, वचन अथवा कर्म से किसी जीव को दुःख पहुँचा हो, किसी के प्रति कटुता आई हो, किसी का मन आहत हुआ हो अथवा हमारे व्यवहार में प्रमाद रहा हो, तो संवत्सरी हमें उन सबका ईमानदारी से आत्मावलोकन करने की प्रेरणा देती है।

'मिच्छामि दुक्कडम्' केवल कहने का शब्द न रहे, बल्कि हमारे अंतर्मन की सच्ची भावना बने। क्षमा तभी सार्थक है, जब उसके साथ अपने व्यवहार में परिवर्तन का संकल्प भी हो।

संवत्सरी हमें यह संदेश देती है कि दूसरों की भूल देखने से पहले हमें अपने भीतर झाँकना चाहिए। क्रोध, मान, माया, लोभ, अहंकार और कटुता को पहचानकर उनसे मुक्त होने का प्रयास ही वास्तविक धर्माराधना है। मन निर्मल होगा तो संबंधों में मधुरता आएगी और समाज में भी प्रेम, एकता एवं सद्भाव मजबूत होगा।

इसी पावन अवसर पर पूज्य आचार्य सम्राट् डॉ. श्री शिवमुनि जी म. का जन्मोत्सव भी हमारे लिए अत्यंत प्रेरणादायी अवसर है। उनका जीवन साधना, स्वाध्याय, संयम, ध्यान और आत्मजागरण की प्रेरणा देता है। उनके जन्मोत्सव को हम केवल उत्सव के रूप में न मनाएँ, बल्कि उनके आध्यात्मिक संदेशों को अपने जीवन में उतारने का संकल्प लें।

पूज्य आचार्य भगवंत के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धा यही होगी कि हम अपने जीवन में अधिक जागरूकता, अधिक संयम, अधिक करुणा और अधिक आत्मशुद्धि का प्रयास करें। उनके जन्मोत्सव का यह पावन अवसर हमारे भीतर आध्यात्मिक ऊर्जा और आत्मपरिवर्तन की प्रेरणा को और प्रबल करे।

आइए, इस संवत्सरी पर हम केवल दूसरों से क्षमा न माँगें, बल्कि स्वयं से भी एक प्रश्न करें-मैंने पिछले वर्ष अपने जीवन में क्या सुधारा? मेरे व्यवहार से किसे पीड़ा पहुँची? और आने वाले वर्ष में मैं स्वयं को कितना बेहतर बना सकता हूँ?

हम संकल्प लें कि आने वाले वर्ष में क्रोध थोड़ा कम करेंगे, अहंकार थोड़ा छोड़ेंगे, कटुता से बचेंगे, संयम को बढ़ाएँगे और प्रेम एवं करुणा को अपने व्यवहार का हिस्सा बनाएँगे। (शेष पृष्ठ 5 में)

सम्पादकीय

भविष्य में स्थानक बचाने हैं तो कागज बचाइए!

'स्थानकवासी जैन समाज के लिए चेतावनी नहीं, जागरण का समय है!'

- डॉ. अमितराय जैन - राष्ट्रीय महामंत्री

धर्मस्थल हमारी आस्था हैं, लेकिन उनकी कानूनी सुरक्षा हमारी जिम्मेदारी है। देश में धार्मिक एवं सार्वजनिक संपत्तियों को लेकर न्यायालयों और प्रशासन की सक्रियता लगातार बढ़ रही है। भूमि का स्वामित्व, रजिस्ट्री, दानपत्र, स्वीकृत भवन-नक्शा, निर्माण अनुमति, भवन के वैधानिक उपयोग तथा नगरपालिका एवं अन्य आवश्यक अभिलेख अब केवल सरकारी फाइलों के विषय नहीं रहे, बल्कि किसी भी धार्मिक संस्था के अस्तित्व और भविष्य की सुरक्षा से सीधे जुड़े प्रश्न बन चुके हैं।

हाल में कलकत्ता हाईकोर्ट के 14 अगस्त 2026 के एक महत्वपूर्ण निर्णय में बिना आवश्यक अनुमति भवन के स्वीकृत उपयोग में परिवर्तन को गंभीरता से लिया गया और यह सिद्धांत स्पष्ट किया गया कि केवल नगरपालिका रिकॉर्ड में किसी प्रकार की प्रविष्टि होना अनाधिकृत उपयोग को वैध नहीं बना देता। यह निर्णय केवल एक भवन या एक संस्था तक सीमित विषय नहीं है, बल्कि उन सभी धार्मिक एवं धर्मार्थ संस्थाओं के लिए एक गंभीर संकेत है, जिन्होंने वर्षों से अपनी संपत्तियों के दस्तावेजों और वैधानिक स्थिति की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया है।

सहारनपुर में हाल में धार्मिक स्थल से संबंधित प्रशासनिक कार्रवाई ने भी इसी चिंता को और प्रासंगिक बना दिया है। हमारा उद्देश्य किसी एक समुदाय की कार्रवाई का समर्थन या विरोध करना नहीं, बल्कि उस व्यापक प्रश्न को सामने रखना है जो ऐसी घटनाओं से उत्पन्न होता है-क्या हमारे पुराने धार्मिक स्थलों के पास उनकी भूमि और भवन से संबंधित पर्याप्त एवं वैधानिक दस्तावेज सुरक्षित हैं?

यह प्रश्न किसी एक धर्म या समुदाय का नहीं है। किंतु वर्तमान परिस्थितियाँ हमें यह चेतावनी देती हैं कि धार्मिक आस्था के साथ-साथ अपनी संस्थागत संपत्तियों की कानूनी सुरक्षा के प्रति भी हमें सजग होना होगा।

विशेष रूप से स्थानकवासी जैन समाज को इस विषय पर गंभीर आत्म निरीक्षण की आवश्यकता है। हमारी परंपरा अत्यंत प्राचीन है और देश के अनेक जैन स्थानकों का इतिहास दशकों ही नहीं, कहीं-कहीं सदियों पुराना है। अनेक स्थानक स्थानीय समाज के सहयोग, दान अथवा पुराने दानपत्रों के आधार पर स्थापित हुए। लेकिन दुर्भाग्य यह है कि हमने अपनी धार्मिक परंपरा को तो सुरक्षित रखा, अपने संतों और महापुरुषों की स्मृतियों को तो संजोया, परंतु अपनी संस्थागत संपत्तियों के कानूनी दस्तावेजों को उतनी गंभीरता से नहीं संभाला। (शेष पृष्ठ 4 में)

With Best Wishes :
R.Mahaveer Chand Ranka
Rajesh kumar-Aarti Jain Vinod kumar-Seema Jain
Dr Rohit, Mohit, Shruthi, Shubh kumar, Aditi Jain

R.Mahaveer Chand Ranka
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक - जैन कॉन्फ्रेंस
9444204046
E mail : rmrjainplr@gmail.com

M. Rajeshkumar Ranka
प्रान्तीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस, तमिलनाडु
9994916455
E mail : rajplr246jj@gmail.com

JAIN JEWELLERY 916 HALL MARK SHOWROOM POLUR
JAIN SILKS & READYMADES POLUR
vannalaya EXCLUSIVE DESIGNER WEDDING COLLECTION POLUR • TIRUVANAMALAI • VILLUPURAM
JAIN PETRO
OXFORD MATRIC HR. SEC SCHOOL
OXFORD COLLEGE OF ENGINEERING POLUR

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के पदाधिकारी साधु-साध्वीवृंद
युगप्रधान, ध्यानयोगी, आचार्य सम्राट् परम पूज्य श्री शिवमुनिजी म.सा.
आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.
उपाध्याय मण्डल
परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म.सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म.सा. 'प्रथम'
प्रवर्तक मण्डल
परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा.
मंत्री मण्डल
परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म.सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म.सा. 'कमलेश' (संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)
सलाहकार मण्डल
परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म.सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म.सा. 'निर्भय'
प्रवर्तिनी मण्डल
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म.सा.

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की मातृसंस्था
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण-कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अतुल जैन, दिल्ली	98110 75336
राष्ट्रीय महामंत्री : प्रो. डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष : श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	83968 00000
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष : श्री जसवंत जैन, दिल्ली	98104 35108
राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष : श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-विश्वस्त मण्डल
चेयरमैन : श्री विजय जैन - पानीपत
वाईस चेयरमैन : श्री नरेश बोहरा जैन - मुंबई
समन्वयक : श्री जसवंत जैन - दिल्ली
सदस्यगण : डॉ. अमित राय जैन - बड़ौत, डॉ. अनामिका तलेसरा जैन - सूरत, श्री आनंदमल छल्लानी जैन - चेन्नई, श्री अंकुर जैन - दिल्ली, श्री अशोक रांका जैन - बेंगलुरु, श्री अतुल जैन - दिल्ली, श्री अविनाश चोरड़िया जैन - नई दिल्ली, श्री जे. डी. जैन - गाजियाबाद, श्री जयंती कुकड़ा जैन - सूरत, श्री कांति कुमार लोढ़ा जैन - औरंगाबाद, श्री कंवरलाल सूर्या जैन - भीलवाड़ा, श्री महावीर रांका जैन - चेन्नई, श्री नरेश आनंद प्रकाश जैन - दिल्ली, श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन - पाली, पद्मश्री श्री नेमनाथ जैन - इंदौर, श्री पारस मोदी जैन - मुंबई, श्री प्रशांत जैन - दिल्ली, श्री रमेश भंडारी जैन - इंदौर, श्री रविन्द्रनाथ जैन - दिल्ली, श्री संजीव हीरालाल जैन - लुधियाना, श्रीमती संतोष जैन - दिल्ली, श्री शशिकांत पिंटू कर्नावट जैन - मालेगांव, श्री सुदर्शन जैन - दिल्ली, श्री विलास राठौर जैन - पुणे, श्री विनय जैन - पानीपत, श्री विनोद कीमती - हैदराबाद, श्री विपुल जैन - दिल्ली

श्रमण संघीय अमृत महामहोत्सव के पावन वर्ष में :

श्रमण संघीय आचार्य सम्राट् पू. श्री शिवमुनि जी म. के 85वें जन्मोत्सव तथा जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर अध्यक्षीय संदेश

- अतुल जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष-जैन कॉन्फ्रेंस

परम श्रद्धेय श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर आचार्य सम्राट्, ध्यानयोगी, पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी महाराज साहब के 85वें जन्मोत्सव के पावन अवसर पर सादर वंदन, अभिनंदन एवं अनंत मंगलकामनाएँ।

पूज्य आचार्य भगवन! आपके पावन जीवन के 85 वर्ष केवल आयु की गणना नहीं हैं, अपितु संयम, साधना, स्वाध्याय, ध्यान, ज्ञान, करुणा और आत्मकल्याण की एक प्रेरणादायी आध्यात्मिक यात्रा हैं। आपका जीवन हमें यह संदेश देता है कि मनुष्य की वास्तविक महानता बाह्य उपलब्धियों में नहीं, बल्कि आत्मविजय, संयम और लोकमंगल में निहित है। आज का यह पावन अवसर हमारे लिए इसलिए और भी ऐतिहासिक है कि हम श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की स्थापना के गौरवमयी 75 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 'श्रमण संघीय अमृत महामहोत्सव' मना रहे हैं। यह 75 वर्षों की यात्रा केवल समय की यात्रा नहीं, बल्कि अनेक संतों की साधना, आचार्य परम्परा के तप, श्रावक-श्राविकाओं की श्रद्धा और संगठन की अखण्ड भावना से निर्मित एक अमूल्य विरासत है।

इस ऐतिहासिक यात्रा में श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। सन् 1906 में स्थापित जैन कॉन्फ्रेंस ने स्थानकवासी जैन समाज को संगठित करने, सामाजिक चेतना जगाने तथा संघीय एकता के लिए निरंतर प्रयास किए। इन्हीं प्रयासों की गौरवशाली परिणति के रूप में सन् 1952 में श्रमण संघ का गठन हुआ। इस प्रकार आध्यात्मिक स्तर पर श्रमण संघ और सामाजिक-संगठनात्मक स्तर पर जैन कॉन्फ्रेंस एक ही मूल भावना-धर्म, एकता, सेवा और समाजोत्थान-के दो सशक्त आधार हैं।

आज जब हम जैन कॉन्फ्रेंस का वार्षिकोत्सव भी मना रहे हैं, तब यह अवसर हमें अपने इतिहास पर गौरव करने के साथ-साथ भविष्य के प्रति अपने उत्तरदायित्व का भी स्मरण कराता है।

पूज्य आचार्यश्री के मंगल आशीर्वाद से प्रारम्भ 'श्रमण संघीय अमृत महामहोत्सव' को हमने केवल समारोहों तक सीमित न रखते हुए एक व्यापक राष्ट्रीय जन-अभियान के रूप में आगे बढ़ाने का संकल्प लिया है। हमारा प्रयास है कि धर्म और ध्यान से आत्मा का कल्याण हो, सेवा से मानवता का कल्याण हो, शिक्षा और शोध से ज्ञान की वृद्धि हो, संस्कारों से नई पीढ़ी का निर्माण हो और संगठन से समाज की शक्ति बढ़े।

इसी भावना से इस अमृत वर्ष में देशभर में धर्म-जागरण, ध्यान एवं साधना, सेवा एवं जनकल्याण, महिला सशक्तिकरण, युवा जागरण, शिक्षा एवं कौशल विकास, शोध एवं प्रकाशन, सामाजिक अभियान तथा संघीय एकता से जुड़े विविध कार्यक्रमों को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया जा रहा है। सेवा को इस महोत्सव का प्रमुख आधार बनाया गया है, क्योंकि श्रमण संस्कृति हमें सिखाती है कि 'करुणा जब कर्म बनती है, तभी धर्म समाज के जीवन में उतरता है।'

हमारा विशेष प्रयास है कि अमृत महामहोत्सव की प्रेरणा नई पीढ़ी तक पहुँचे। हमारे बच्चे और युवा अपनी गौरवशाली परम्परा को केवल इतिहास के रूप में न जानें, बल्कि अहिंसा, अनेकांत, संयम, करुणा, सत्य और सेवा जैसे जैन जीवन-मूल्यों को आधुनिक जीवन में आत्मसात करें। तकनीक और आधुनिकता के साथ आगे बढ़ते हुए भी वे अपनी आध्यात्मिक जड़ों से जुड़े रहें-यही हमारे भविष्य की सबसे बड़ी सफलता होगी। साथ ही हमारा संकल्प है कि श्रमण संघ की गौरवशाली यात्रा, आचार्य परम्परा, ऐतिहासिक दस्तावेजों और समाज की प्रेरक उपलब्धियों को शोध, प्रकाशन, स्मृति ग्रंथ और डिजिटल माध्यमों से संरक्षित किया जाए, जिससे हमारी यह विरासत आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रामाणिक प्रेरणा-स्रोत बन सके।

आज आवश्यकता है कि हम सब व्यक्ति से ऊपर संगठन, मत से ऊपर समन्वय और स्वार्थ से ऊपर समाज को स्थान दें। संगठन की वास्तविक शक्ति पदों में नहीं, बल्कि परस्पर विश्वास, सहयोग और सामूहिक संकल्प में निहित होती है। 'एक संघ-एक भावना-एक संकल्प' के साथ हमें आगे बढ़ना है।

(शेष पृष्ठ 3 में)

भारतीय डाक टिकटों में जैन गौरव की अनुभूतियाँ श्रृंखला...

साध्वी उमराव कुंवर जी 'अर्चना'

- खुशबू जैन

भारतीय डाक टिकटों में स्थानकवासी जैन गौरव की अनुभूतियाँ एक समृद्ध और गौरवपूर्ण इतिहास को अभिव्यक्त करती हैं। इस श्रृंखला में श्रमण संघीय साध्वी श्री उमराव कुंवर जी म. 'अर्चना' के सम्मान में जारी स्मारक डाक टिकट विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

साध्वी उमराव कुंवर जी म. 'अर्चना' का जन्म 15 अगस्त 1922 को राजस्थान के किशनगढ़ के दादिया ग्राम में हुआ था। उनका बाल्यकालीन नाम अलोलकुंवर था। अल्पायु में वैधव्य के बाद उनका जीवन आध्यात्मिक साधना की ओर मुड़ा और विक्रम संवत् 1994 में मेड़ता में उन्होंने महासाध्वी श्री सरदार कुंवर जी म. के सान्निध्य में प्रवर्तक पूज्य श्री हजारीमल जी महाराज की शिष्या के रूप में दीक्षा ग्रहण की।

उन्होंने देश के अनेक क्षेत्रों-राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश और तमिलनाडु-में विहार करते हुए जैन दर्शन, अहिंसा, नैतिकता और आध्यात्मिक चेतना का व्यापक प्रचार-प्रसार किया। साहित्य-सृजन एवं समाजसेवा के क्षेत्र में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

उनकी आध्यात्मिक एवं सामाजिक सेवाओं के सम्मान स्वरूप भारत सरकार के डाक विभाग ने 30 अप्रैल 2011 को उनके नाम पर रुपये 5 मूल्यवर्ग का बहुरंगी स्मारक डाक टिकट जारी किया। टिकट का डिजाइन एवं प्रथम दिवस आवरण/रद्दीकरण की कला-संबंधी क्रेडिट नैनू गुप्ता को दिया गया है।

22 अप्रैल 2009 को 87 वर्ष की आयु में उनका देहावसान हुआ, किंतु उनका जीवन आज भी साधना, साहित्य, सेवा और जैन धर्म के प्रचार-प्रसार की प्रेरणादायी गाथा के रूप में स्मरण किया जाता है।

इस प्रकार साध्वी उमराव कुंवर जी म. 'अर्चना' पर जारी डाक टिकट केवल एक फिलाटेलिक दस्तावेज नहीं, बल्कि स्थानकवासी जैन साध्वी-परंपरा, आध्यात्मिक चेतना, साहित्य-साधना और समाजसेवा को भारत सरकार द्वारा प्रदान किए गए राष्ट्रीय सम्मान का अमूल्य प्रतीक है।

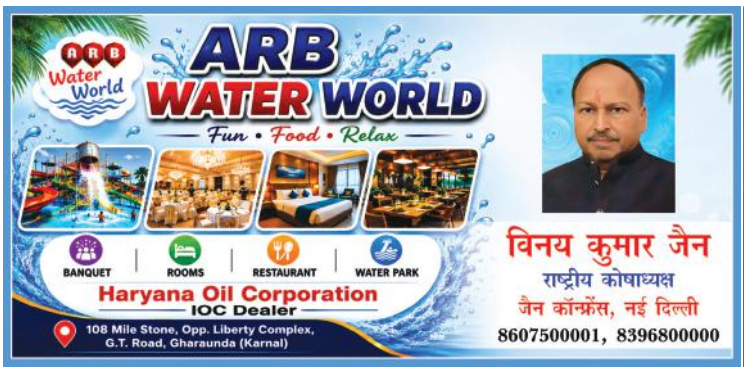

अहिंसा का अर्थ

अहिंसा, दया, प्रेम - ये सभी शब्द पर्यायवाची हैं। छोटे-से-छोटे और बडे-से-बडे सभी जीवों में आत्मीय भाव को अनुभव करना 'अहिंसा' है। सभी जीवों को अपने प्राण वैसे ही प्रिय हैं जैसे हमें अपने प्राण प्रिय हैं। सभी को सुख प्रिय है और दुख अप्रिय है। इसलिए सभी जीवों की रक्षा करना हमारा कर्त्तव्य भी है और धर्म भी है। इस संसार में वही व्यक्ति महान माने गए हैं जो सभी जीवों को अपने समान मानकर प्रेमपूर्वक उनकी रक्षा करते हैं। ऐसे ही एक महान व्यक्ति - नोबेल पुरस्कार विजेता अल्बर्ट श्वाइट्जर के जीवन की एक घटना यहां दी जा रही है!

अल्बर्ट श्वाइट्जर का व्यक्तित्व मानवीय गुणों से सम्पन्न था। वे सृष्टि के समस्त जीवों से सहानुभूति एवं प्यार करते थे। किसी जीव की रक्षा एवं सेवा के लिए वे सदैव तत्पर रहते थे। भले ही इसके लिए उन्हें कितनी भी कुर्बानी करनी पड़े। एक बार की बात है अल्बर्ट श्वाइट्जर को अपने मित्र के साथ यात्रा पर जाना था। स्टेशन तक पहुँचने के लिए कोई सवारी उन्हें मिल नहीं पायी। स्टेशन दूर था और गाड़ी का समय होने वाला था। उन्होंने अपना सामान बांधा और एक लाठी पर उसे लटका दिया। लाठी का एक सिरा श्वाइट्जर ने और दूसरा सिरा उनके मित्र ने पकड़ा। दोनों तीव्र गति से स्टेशन की ओर चल पड़े। आगे-आगे अल्बर्ट और पीछे-पीछे मित्र। घड़ी की सुइयाँ तेजी से घूम रही थीं। स्टेशन धीरे-धीरे पास आ रहा था। दोनों ने अपनी गति और बढ़ा दी। स्टेशन आने ही वाला था कि अकस्मात् उनके मित्र को एक जोरदार झटका लगा। लाठी के बीचोंबीच लटकने वाला सामान खिसक कर करीब-करीब उसके सिर पर आ गया। वह गिरते-गिरते मुश्किल से संभला। घबराकर श्वाइजर ने मित्र से कहा - ''मुझे माफ करना। मित्र! यह देखो रास्ते में एक कीड़ा पड़ा है। किसी के भी पांव इसे कुचल सकते हैं। इसी को बचाने के लिए मैं एक तरफ हुआ तो मेरा संतुलन बिगड़ गया और सारा बोझ आप पर आ पड़ा। कृपया थोड़ी-सी देर रुक जाइए। मैं अभी इस कीड़े को उठाकर एक तरफ रख देता हूँ।''

कहकर श्वाइट्जर ने एक पतली लकड़ी उठायी, कीड़े को बड़ी ममता से उस पर चढ़ाया और रास्ते से परे रख दिया। कीड़े को सुरक्षित पा कर उन्हें बड़ी खुशी हुई। उधर गाड़ी प्लेटफार्म पर लग चुकी थी। दोनों ने दौड़कर बचा हुआ रास्ता पार किया। जैसे ही उन्होंने स्टेशन पर पांव रखा, गाड़ी चल पड़ी। गाड़ी उन्हें न मिल पायी लेकिन श्वाइट्जर ने एक कीड़े की सुरक्षा के लिए गाड़ी छोड़ना बड़ी आसानी से स्वीकार कर लिया था।

श्रमण संघीय पूज्य संत परंपरा के दुर्लभ चित्र श्रृंखला....

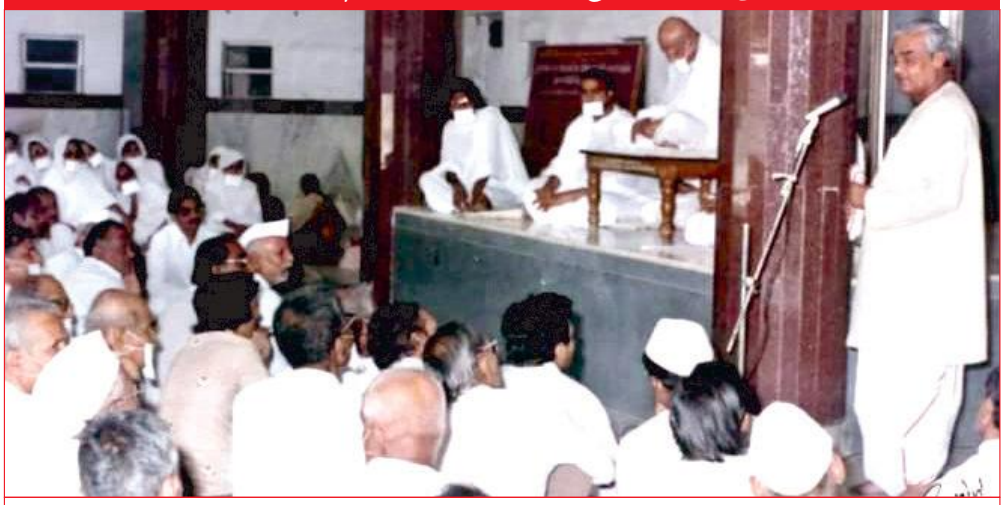

चित्र परिचय : सन् 1980 के दशक में अहिल्यानगर (तत्कालीन अहमदनगर) में विराजमान जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट पूज्य श्री आनंदऋषि जी महाराज एवं साधु-साध्वीवृंद के दर्शन करने पधारे देश के पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी धर्मसभा को संबोधित करते हुए। (संदर्भ - शहजाद राय शोध संस्थान, बड़ौत)

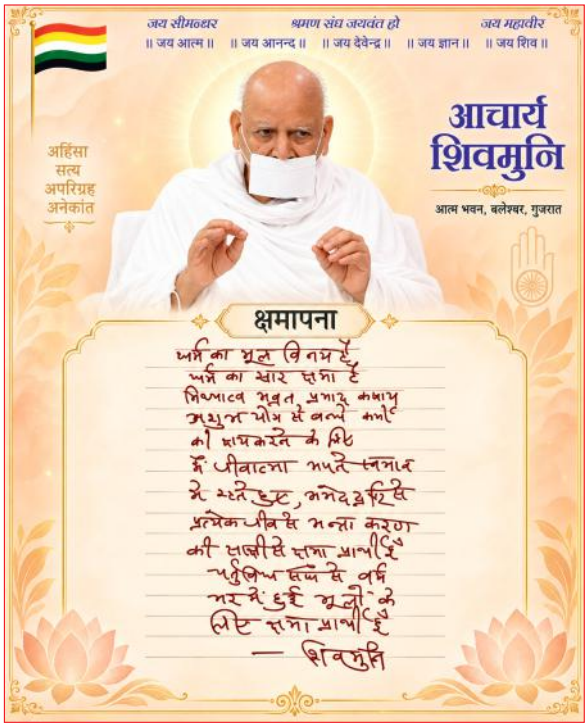

जैन गौरव गुरु गोविन्द सिंह जी और जैन श्रावक

गुरु गोविन्द सिंह जी का जन्म 1666 में पटना शहर के प्रसिद्ध साहूकार जैन श्रावक सेठ सालसराय जी जौहरी की पवित्र हवेली में हुआ। जन्म के समय पिता गुरु तेग बहादुर जी बंगाल, असम आदि पूर्वोत्तर प्रदेश की यात्रा प्रवास पर थे। 4-5 वर्ष की आयु में ही प्रथम मिलन पटना के नवाब बाग में हुआ। जन्म स्थान सेठ सालसराय जी जौहरी की हवेली का वह कमरा जहाँ पर गुरु गोविन्द सिंह जी का अवतरण हुआ था, वह सिक्ख समुदाय के लिये पवित्र तीर्थ बन चुका था, प्रतिदिन तीर्थ यात्री इस स्थान के दर्शन करने आते थे।

सालसराय जी जौहरी के पौत्र श्री धनश्याम जी ने गुरुद्वारा श्री हरि मंदिर साहब को पूरी हवेली सौंप दी। आज भी वह पवित्र स्थान सुन्दर स्वरूप में विद्यमान है। लोग बताते हैं कि गुरु द्वारा में होने वाली कथाओं में जौहरी जी का नाम बड़ी श्रद्धा से उल्लेख करते हैं। वहाँ के सभागृह पर भी जौहरी जी का नाम लिखा है। जैन धर्म-सिक्ख धर्म का सुन्दर धर्म समन्वय इतिहास की धरोहर है।

(पृष्ठ 2 का शेष) अमृत महामहोत्सव तभी सार्थक होगा जब इसके कार्यक्रम समाप्त होने के बाद भी इसकी प्रेरणा हमारे जीवन में जीवित रहे-सेवा निरंतर चलती रहे, संस्कार अगली पीढ़ी तक पहुँचते रहें, शोध और अध्ययन आगे बढ़ता रहे तथा संघीय एकता और अधिक सुदृढ़ होती जाए। यही इस महोत्सव की स्थायी विरासत होनी चाहिए।

आज पूज्य आचार्यश्री के 85वें जन्मोत्सव के इस मंगल अवसर पर मैं जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से गुरुदेव के श्रीचरणों में यही भावना अर्पित करता हूँ कि आपका आध्यात्मिक मार्गदर्शन हमें निरंतर प्राप्त होता रहे। आपकी साधना की ऊर्जा हमारे समाज को संस्कार दे, आपका ध्यान-दर्शन आत्मकल्याण की दिशा दिखाए और आपका आशीर्वाद श्रमण संघ तथा जैन कॉन्फ्रेंस की एकता को और अधिक सुदृढ़ बनाए।

मैं इस अवसर पर देशभर के सभी साधु-साध्वी भगवंतों, श्रावक-श्राविकाओं, जैन संघों, जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय, प्रांतीय, महिला एवं युवा शाखाओं, पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं, सहयोगियों और अमृत महामहोत्सव से जुड़े प्रत्येक समर्पित व्यक्ति के प्रति हृदय से कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

आइए, इस ऐतिहासिक अवसर पर हम सब एक सामूहिक संकल्प लें-धर्म को आचरण बनाएँगे, ध्यान को आत्मजागरण का माध्यम बनाएँगे, सेवा को अपना कर्तव्य बनाएँगे, संस्कारों को नई पीढ़ी तक पहुँचाएँगे और संघीय एकता को अपनी सबसे बड़ी शक्ति बनाएँगे।

इन्हीं भावनाओं के साथ पूज्य आचार्य सम्राट् डॉ. श्री शिवमुनि जी महाराज साहब के 85वें जन्मोत्सव पर कोटिशः वंदन-अभिनंदन एवं मंगलकामनाएँ तथा जैन कॉन्फ्रेंस परिवार के सभी सदस्यों को वार्षिकोत्सव एवं श्रमण संघीय अमृत महामहोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएँ। जय वीर! जय महावीर! जय श्रमण संघ! जय जैन कॉन्फ्रेंस!

प्रमाद से प्रमोद

सजग जीवन की साधना

पुस्तक से साभार

लेखक-गुरुभक्त अतुल जैन

(गतांक से आगे) अध्याय 33

ऊर्जा की गांठें क्या हैं?

(गहन विस्तार)

जब हम कहते हैं कि भीतर "गांठ" है, तो वह केवल एक रूपक नहीं है। वह एक जीवित अनुभव है। कभी छाती में दबाव, कभी गले में रुकावट, कभी नाभि में कठोरता, कभी सिर में भारीपन-ये सब संकेत हैं कि ऊर्जा का प्रवाह कहीं रुक गया है। इन रुकावटों को ही हम ऊर्जा की गांठें कह सकते हैं।

1. गांठ कैसे बनती है? : हर तीव्र अनुभव-भय, अपमान, असफलता, त्याग, अपराध बोध-यदि पूर्ण रूप से अनुभव न किया जाए, तो वह अधूरा रह जाता है। अधूरा अनुभव ऊर्जा के रूप में शरीर में जमा हो सकता है। जब उसे देखा नहीं जाता, स्वीकार नहीं किया जाता, तो वह गांठ बन जाता है।

2. दमन और संचय : जब व्यक्ति कहता है-"कुछ नहीं हुआ।" "मुझे फर्क नहीं पड़ा।" "मैं ठीक हूँ।" तो संभव है कि भीतर कुछ दबाया जा रहा हो। दमन ऊर्जा को समाप्त नहीं करता। वह उसे स्थगित करता है। और स्थगित ऊर्जा कभी न कभी सतह पर आएगी।

3. गांठ का अनुभव : ऊर्जा की गांठें अक्सर इन रूपों में अनुभव होती हैं - छाती में स्थायी कसाव, नाभि में लगातार तनाव, गले में भारीपन, कंधों में जकड़न, आँखों में दबाव, ये केवल शारीरिक लक्षण नहीं हैं। ये भावनात्मक अवशेष हैं।

4. अहंकार और गांठ : जहाँ अहंकार आहत होता है, वहाँ गांठ बनने की संभावना अधिक होती है। अपमान, अस्वीकृति, असफलता, यदि इन्हें तुरंत बचाव से ढँक दिया जाए, तो भीतर कड़वाहट जम सकती है।

5. समय के साथ कठोरता : यदि गांठ लंबे समय तक बनी रहे, तो वह व्यक्ति की पहचान का हिस्सा बन सकती है। "मैं ऐसा ही हूँ।" "मैं किसी पर भरोसा नहीं करता।" "मैं कमजोर नहीं पड़ता।" यह वाक्य अक्सर पुरानी गांठों की रक्षा करते हैं।

6. गांठ का पिघलना : गांठ को तोड़ा नहीं जा सकता। उसे पिघलाना पड़ता है। पिघलना होता है-सजगता से श्वास से स्वीकृति से करुणा से जब आप उस स्थान पर ध्यान ले जाते हैं और उसे महसूस करते हैं, तो ऊर्जा धीरे-धीरे खुलने लगती है।

7. भाव के साथ बैठना : यदि छाती भारी है, तो तुरंत कारण खोजने की आवश्यकता नहीं। पहले उस भारीपन के साथ बैठें। श्वास को वहाँ तक ले जाएँ। उसे बदलने की कोशिश न करें। देखना ही पिघलाने की शुरुआत है।

8. आँसू और नरमी : कभी गांठ पिघलते समय आँसू आ सकते हैं। हल्की कंपन हो सकती है। भीतर नरमी आ सकती है। यह कमजोरी नहीं है। यह मुक्त होना है।

9. गांठ और प्रमाद : जहाँ गांठ है, वहाँ ऊर्जा का प्रवाह बाधित है। जहाँ प्रवाह बाधित है, वहाँ प्रतिक्रिया तीव्र होगी। इसलिए गांठें प्रमाद को जीवित रखती हैं। जब गांठ पिघलती है, तो प्रतिक्रिया कम होती है।

10. अंतिम स्पष्टता : ऊर्जा की गांठें दबी हुई अनुभूतियों का संचय हैं। उन्हें बल से नहीं हटाया जा सकता। उन्हें प्रेम से खोला जाता है। जब सजगता उन तक पहुँचती है, तो धीरे-धीरे वे ढीली पड़ती हैं। अगले अध्याय में हम समझेंगे-भय की गांठ कैसे सबसे गहरी जड़ बन सकती है। (क्रमशः)

जैन दर्शन के विदेशी विद्वान श्रृंखला...

ब्रिटिश संसद में जैन दर्शन की मुखर आवाज : गैरेथ थॉमस

- प्रोफेसर डॉ. आंचल जैन

जैन दर्शन की वैश्विक प्रतिष्ठा केवल उसके अनुयायियों के कारण नहीं, बल्कि उन विदेशी विद्वानों, चिंतकों और सार्वजनिक व्यक्तित्वों के कारण भी बनी है, जिन्होंने इसके सार्वभौमिक सिद्धांतों को समझकर उन्हें विश्व के व्यापक मंच पर प्रतिष्ठित किया। ब्रिटेन के वरिष्ठ सांसद गैरेथ रिचर्ड थॉमस इसी परंपरा का एक उल्लेखनीय नाम हैं।

15 जुलाई 1967 को लंदन के हैरो क्षेत्र में जन्मे गैरेथ थॉमस ने Aberystwyth University से अर्थशास्त्र का अध्ययन किया और राजनीति में आने से पूर्व अध्यापन कार्य किया। 1997 में वे पहली बार Harrow West से ब्रिटिश संसद के लिए निर्वाचित हुए और तब से लगातार इस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। ब्रिटिश सरकार में अंतर्राष्ट्रीय विकास एवं व्यापार से संबंधित महत्वपूर्ण दायित्व भी उन्होंने निभाए हैं।

जैन समाज के लिए उनका सबसे विशिष्ट योगदान ब्रिटिश संसद में All-Party Parliamentary Group for Jainism (Jain APPG) की स्थापना से जुड़ा है। 22 सितंबर 2016 को गठित इस संसदीय समूह के वे प्रथम अध्यक्ष बने। इस मंच के माध्यम से ब्रिटेन में जैन धर्म की विशिष्ट पहचान, उसके सांस्कृतिक योगदान और उसके मूल सिद्धांतों को सार्वजनिक एवं संसदीय विमर्श में स्थान मिला।

संसद में जैन दर्शन की व्याख्या : 1 मई 2019 को Westminster Hall में "The Contribution of the Jain Community to the UK" विषय पर बहस प्रारंभ करते हुए गैरेथ थॉमस ने जैन धर्म को "A major and ancient religion of Indian origin" बताया। उन्होंने ब्रिटेन में जैन समुदाय के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक योगदान को रेखांकित करते हुए कहा कि उसकी उपस्थिति और योगदान को अधिक गंभीरता से पहचाना जाना चाहिए।

उनके भाषण की विशेषता यह थी कि उन्होंने जैन धर्म को केवल धार्मिक पहचान के रूप में नहीं, बल्कि एक दार्शनिक और नैतिक जीवन-दृष्टि के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांतवाद की व्याख्या करते हुए बताया कि ये सिद्धांत आज के विश्व की अनेक चुनौतियों के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक हैं।

अहिंसा को उन्होंने समस्त जीवन के प्रति हिंसा से विरत रहने की व्यापक भावना से जोड़ा, अपरिग्रह को अनावश्यक संचय और अत्यधिक उपभोग से बचने की दृष्टि के रूप में देखा, जबकि अनेकांतवाद को विभिन्न दृष्टिकोणों को समझने और मतभिन्नताओं के बीच सह-अस्तित्व की राह दिखाने वाला सिद्धांत माना।

यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि जैन दर्शन के ये मूल सिद्धांत किसी धार्मिक सभा में नहीं, बल्कि ब्रिटिश संसद के आधिकारिक मंच पर एक गैर-जैन सांसद द्वारा विस्तार से प्रस्तुत किए गए।

गैरेथ थॉमस ने ब्रिटेन की जनगणना में जैन धर्म को पृथक धार्मिक पहचान दिए जाने की आवश्यकता का भी समर्थन किया। 2025 में प्रकाशित Jains in the UK में उन्होंने जैन समुदाय की "sincere, timeless beliefs" को ब्रिटेन के लिए समृद्धिदायक बताया और उसके योगदान को उचित पहचान देने की आवश्यकता पर बल दिया। जैन धर्म के प्रति उनका दृष्टिकोण इस बात का उदाहरण है कि अहिंसा मानवता के लिए, अनेकांत संवाद के लिए और अपरिग्रह पर्यावरणीय संतुलन के लिए आज भी प्रासंगिक हैं। यही कारण है कि गैरेथ थॉमस का नाम जैन धर्म के उन विदेशी प्रशंसकों में आदरपूर्वक लिया जा सकता है, जिन्होंने भगवान महावीर के संदेश को भारत की सीमाओं से आगे बढ़ाकर ब्रिटेन के लोकतांत्रिक विमर्श का हिस्सा बनाया।

संदर्भ : **UK Parliament, Hansard, Jain Community: Contribution to the UK, 1 May 2019; Institute of Jainology, Jain APPG in British Parliament; Jains in the UK, 2025; Gareth Thomas MP-Official Biography.**

(पृष्ठ 1 का शेष 'सम्पादकीय') कहीं पुराने दानपत्र उपलब्ध नहीं हैं, कहीं भूमि की रजिस्ट्री स्पष्ट नहीं है, कहीं ट्रस्ट के पुराने दस्तावेज अधूरे हैं और कहीं समय के साथ भवन में हुए निर्माण एवं विस्तार का रिकॉर्ड व्यवस्थित नहीं है। संभव है कि उस समय परिस्थितियाँ ऐसी रही हों कि दस्तावेजों की आवश्यकता महसूस न हुई हो। समाज की श्रद्धा ही सबसे बड़ा प्रमाण मानी जाती रही हो। लेकिन आज परिस्थितियाँ बदल चुकी हैं।

यह मान लेना कि 'स्थानक बहुत पुराना है और समाज वर्षों से इसका उपयोग कर रहा है, इसलिए कोई कानूनी समस्या नहीं आएगी'-अब पर्याप्त नहीं है। इसलिए अब प्रत्येक स्थानक, उपाश्रय, धर्मशाला और जैन संस्था को अपनी संपत्ति की Legal एवं Municipal Audit को प्राथमिकता देनी चाहिए। भूमि संबंधी दस्तावेज, रजिस्ट्री अथवा दानपत्र, ट्रस्ट के अभिलेख, पुराने राजस्व एवं नगरपालिका रिकॉर्ड, भवन का स्वीकृत नक्शा, निर्माण की अनुमति और वर्तमान उपयोग से संबंधित वैधानिक स्थिति-इन सबकी व्यवस्थित समीक्षा होनी चाहिए। पुराने दस्तावेजों को सुरक्षित रखने के साथ उनकी डिजिटल प्रतियाँ भी तैयार की जानी चाहिए। जहाँ कोई कमी अथवा विसंगति मिले, उसे छिपाने या टालने के बजाय योग्य अधिवक्ता, आर्किटेक्ट और राजस्व विशेषज्ञ की सहायता लेकर कानून में उपलब्ध वैध प्रक्रिया के माध्यम से उसका समाधान खोजा जाना चाहिए।

यह काम किसी नोटिस के बाद नहीं, नोटिस आने से पहले होना चाहिए, क्योंकि राजनीतिक परिस्थितियाँ स्थायी नहीं होतीं। सरकारें बदलती हैं, नीतियाँ बदलती हैं और प्रशासनिक प्राथमिकताएँ भी बदलती रहती हैं। आज जिस विषय को हम किसी दूसरे समुदाय से जुड़ा हुआ समझकर देख रहे हैं, वही प्रश्न कल हमारी अपनी संस्थाओं के सामने भी खड़ा हो सकता है। इसलिए हमें किसी राजनीतिक संरक्षण पर नहीं, बल्कि मजबूत दस्तावेजी और वैधानिक स्थिति पर अपनी धार्मिक संपत्तियों की सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए।

जैन इतिहास हमें यह भी सिखाता है कि समय के साथ अनेक जैन धर्मस्थल हमारी सामुदायिक पहुँच से बाहर हुए। कहीं परिस्थितियों ने समाज को पलायन के लिए विवश किया, कहीं धार्मिक स्थलों का स्वरूप बदला और कहीं हमारी ऐतिहासिक स्मृतियाँ ही विलुप्त हो गईं। आज हमारे पास जो स्थानक, उपाश्रय, मंदिर, धर्मशालाएँ और अन्य धार्मिक संस्थाएँ हैं, वे केवल ईंट-पत्थर के भवन नहीं हैं। वे हमारी धार्मिक पहचान, सामाजिक चेतना और पूर्वजों की अमूल्य धरोहर हैं। इसलिए स्थानकवासी जैन समाज को अब इस विषय पर और उदासीन रहने का अधिकार नहीं है। प्रत्येक स्थानक की फाइल खुले, पुराने कागज खोजे जाएँ, रिकॉर्ड व्यवस्थित हों और जहाँ आवश्यकता हो वहाँ कानूनी प्रक्रिया तत्काल प्रारंभ की जाए।

नोटिस का इंतजार मत कीजिए। विवाद का इंतजार मत कीजिए। कार्रवाई का इंतजार मत कीजिए। आज दस्तावेज सँभालिए, ताकि कल स्थानक सुरक्षित रहें। आस्था स्थानक बनाती है, लेकिन दस्तावेज उसे सुरक्षित रखते हैं।

BETTER SAFE THAN SORRY

समाजरत्न दानवीर मामाशाह

लाला आनन्द प्रकाश जी जैन

महिलारत्न

स्व. श्रीमती कमलेश आनन्द प्रकाश जी जैन

देश में विराजित पूज्य संत-साध्वीजी म. के पावन चरणों में

कोटि-कोटि वंदन एवं श्रद्धापूर्ण नमन

NAMO eWaste

Namo e waste Management Ltd.

E waste & lithium in battery recycling

EPR facility

8130393628 admin@namoewaste.com

Vardhman Recycling LLP

Old vehicles recycling with certificate of disposal

Plastic recycling EPR facility

8130393611 vardhmanautorecycling@gmail.com

नरेश आनन्दप्रकाश जैन

राष्ट्रीय अध्यक्ष

ज्ञान प्रकाश योजना, जैन कॉन्फ्रेंस

रचना नरेश जैन

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक

जैन कॉन्फ्रेंस, राष्ट्रीय महिला शाखा

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (SAISSJC) की डिजिटल क्रांति: वैश्विक पहचान, प्रोफेशनल प्रबंधन और अभूतपूर्व विकास की विस्तृत रिपोर्ट

आधुनिक डिजिटल युग की माँग को समझते हुए, SAISSJC ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स को सशक्त और व्यवस्थित किया है। इसके परिणामस्वरूप पिछले 10 महीनों में इसके सभी सोशल मीडिया हैंडल्स पर फॉलोअर्स, वीडियों व्यूज और यूजर एंगेजमेंट में अभूतपूर्व (Remarkable) वृद्धि दर्ज की गई है।

10 महीनों की ऐतिहासिक वृद्धि के Key Growth Indicators : पिछले 10 महीनों में दर्ज की गई यह अभूतपूर्व वृद्धि संस्था के डिजिटल विस्तार को दर्शाती है: रीच में तीव्र उछाल : देश और विदेश के सभी आयु वर्ग के लोगों, विशेषकर युवाओं और प्रवासी भारतीयों (NRIs) का सोशल मीडिया हैंडल्स से तेजी से जुड़ना।

वीडियो व्यूज में रिकॉर्ड बढ़ोतरी (Views & Reach) : धार्मिक पोस्ट्स, कार्यक्रमों, चातुर्मास अपडेट्स और रील्स को लाखों की संख्या में ऑर्गेनिक व्यूज मिलना।

यूजर एंगेजमेंट (User Engagement) : पोस्ट्स, रील्स पर लाईक्स, शेयर्स, कमेंट्स और सेव (Saves) की संख्या में कई गुना वृद्धि, जो समाज बंधुओं के सक्रिय जुड़ाव को दर्शाती है।

कम्युनिटी का विस्तार (Community Building) : स्थानकवासी जैन समाज के साथ-साथ अन्य समाजों और विद्वानों तक संस्था के संदेश का पहुँचना।

प्रोफेशनल प्रबंधन (Professional Management) - सफलता का आधार : पिछले 10 महीनों की यह सफलता केवल एक संयोग नहीं, बल्कि प्रोफेशनल सोशल मीडिया स्ट्रैटेजी और मैनेजमेंट का परिणाम है, उच्च गुणवत्ता वाली कंटेंट रणनीति (High-Quality Content Strategy) - आधुनिक ग्राफिक्स डिजाइनिंग, AI, एडिटिंग और आकर्षक इन्फोग्राफिक्स का उपयोग। - दैनिक प्रेरणादायक विचार, धार्मिक शिक्षाप्रद पोस्ट्स और शॉर्ट-फॉर्म रील्स का निर्माण।

सम्पादकीय और नैतिक मानक (Editorial & Ethical Standards) : जैन दर्शन की गरिमा, अहिंसा के सिद्धांतों और संस्था की प्रतिष्ठा को ध्यान में रखते हुए उच्च स्तरीय कंटेंट ऑडिट।

वैश्विक पहुँच (Global Reach) - अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान : SAISSJC का संदेश अब सीमाओं को पार करते हुए विश्व के प्रमुख देशों में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा चुका है। प्रोफेशनल मैनेजमेंट के कारण भारत के साथ-साथ विदेशों में बसे प्रवासी भारतीय और जैन समाज के लोग इस कंटेंट को अत्यधिक पसंद कर रहे हैं।

आधिकारिक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स :

1. फेसबुक (Facebook)

भूमिका : सामाजिक जुड़ाव, आधिकारिक घोषणाओं, सर्कुलर और लाइव कार्यक्रमों का मुख्य केंद्र। प्रगति : भारत, USA, UK और UAE से बड़ी संख्या में संख्या में एक्टिव यूजर्स का जुड़ाव।

2. इंस्टाग्राम (Instagram)

भूमिका : युवाओं (Youth Wing) को आकर्षित करने हेतु विजुअल स्टोरीटेलिंग, शॉर्ट रील्स और क्रिएटिव पोस्ट्स। प्रगति : पिछले 10 महीनों में रील्स पर भारी ऑर्गेनिक व्यूज की संख्या में रिकॉर्ड बढ़ोतरी।

3. यूट्यूब (YouTube)

भूमिका : प्रवचनों, धार्मिक प्रसारण, वीडियोस एवं रील्स का प्लेटफॉर्म। प्रगति : वॉच-टाइम (Watch Time) में कई गुना वृद्धि, विदेशों में बैठे श्रद्धालुओं के लिए घर बैठे जुड़ने का मुख्य जरिया।

4. लिंक्डइन (LinkedIn)

भूमिका : लीडर्स, स्टूडेंट्स जॉब सीकर्स प्रोफेशनल्स के साथ प्रोफेशनल नेटवर्किंग। प्रगति : संस्था की पारदर्शी कार्यप्रणाली और समाज सेवा से जुड़ी योजनाओं को बौद्धिक वर्ग तक पहुँचाने में बेहद सफल। इस डिजिटल पहल के सक्रिय भागीदार बनें।

Facebook : saissjc1906
Instagram : aissjc1906
YouTube : @aissjc
LinkedIn : aissjc1906

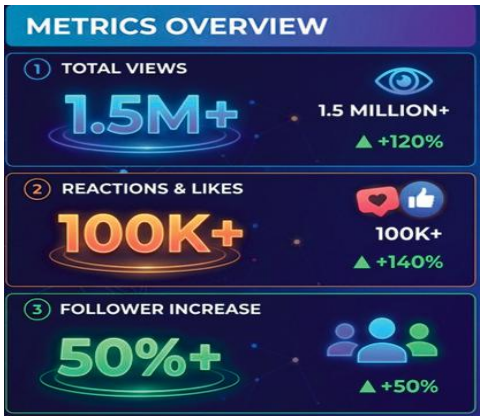

भविष्य की दिशा-निष्कर्ष (Future Outlook) : एक समृद्ध और संगठित भविष्य की ओर - अक्टूबर 2025 से जुलाई 2026 के बीच हासिल की गई यह ऐतिहासिक उपलब्धि केवल आंकड़ों की बात नहीं है, बल्कि यह इस बात का प्रमाण है कि श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस अपनी समृद्ध परंपराओं को सहेजते हुए युगानुकूल बदलावों को अपनाने में पूरी तरह सक्षम है।

सहभागिता एवं सुझाव आमंत्रित - अपने विचार और कंटेंट भेजें : संस्था इस डिजिटल यात्रा को पूर्णतः समावेशी (Inclusive) बनाना चाहती है। यदि आपके पास : समाज हितैषी एवं धार्मिक गतिविधियों का कोई उपयोगी कंटेंट (लेख, वीडियो, फोटो) है, अथवा सोशल मीडिया के विस्तार हेतु कोई बहुमूल्य सुझाव/फीडबैक है, तो आप सादर आमंत्रित हैं। अपने विचार और सामग्री संस्था को सीधे ईमेल या व्हाट्सऐप के माध्यम से भेज सकते हैं।

ईमेल : aissjc1906@gmail-com, संपर्क सूत्र : 81306 70524

- राजेश मेहरा, सी.ओ.एस. जैन भवन मुख्यालय

(पृष्ठ 1 का शेष 'अध्यक्षीय')

पूज्य आचार्य सम्राट डॉ. श्री शिवमुनि जी म. के जन्मोत्सव पर उनके चरणों में विनम्र नमन करते हुए उनके दीर्घ, स्वस्थ एवं मंगलमय जीवन की हार्दिक मंगलकामना करता हूँ।

समस्त साधु-साध्वी भगवंतों की पावन सन्निधि में संवत्सरी महापर्व की आराधना कर रहे सभी श्रावक-श्राविकाओं को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ। आइए, इस संवत्सरी पर हमारी क्षमा भावना केवल एक दिन की भावना न रहकर हमारे जीवन का स्थायी संस्कार बने। मिच्छामि दुक्कडम्, जय जिनेंद्र!

पंजाब के राज्यपाल श्री गुलाबचंद कटारिया का पर्युषण पर्व की प्रवचन सभा के दौरान सामायिक करना स्थानकवासी जैन समाज के लिए गौरव का क्षण

चंडीगढ़ : पर्युषण महापर्व के पावन अवसर पर सेक्टर-18, चंडीगढ़ स्थित जैन स्थानक में उपाध्याय श्री जितेंद्रमुनि जी महाराज की प्रवचन सभा में पंजाब के राज्यपाल एवं चंडीगढ़ के प्रशासक श्री गुलाबचंद कटारिया का जैन धर्म की परंपराओं के प्रति सम्मान और श्रद्धा का भाव अत्यंत सराहनीय है।

प्रवचन में सहभागी होकर चादर ओढ़, मुखवस्त्रिका धारण करना एवं सामायिक की साधना करना जैन संस्कारों और आध्यात्मिक परंपराओं के प्रति उनके सम्मान को दर्शाता है। यह क्षण केवल एक धार्मिक सहभागिता नहीं, बल्कि सादगी, अनुशासन, अहिंसा और आत्मसंयम की जैन भावना के प्रति सम्मान का सुंदर उदाहरण है। जब हमारे समाज का एक गौरवशाली प्रतिष्ठित व्यक्तित्व हमारी धार्मिक परंपराओं को अपनाकर उनके प्रति श्रद्धा प्रकट करता है, तो निश्चित रूप से यह समस्त समाज के लिए गर्व और प्रेरणा का विषय बन जाता है। - जैन प्रकाश संपादकीय टीम

J. P. Jain Foundation
(स्व. श्री जय प्रकाश जैन की पुण्य स्मृति में स्थापित)
सेवा, करुणा और अहिंसा के मूल्यों को आत्मसात करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहयोग पहुँचाने के उद्देश्य से निम्न जनकल्याणकारी सेवा-कार्यों का सतत् संचालन

- जैन हेल्थकेयर सेंटर के माध्यम से निःस्वार्थ एवं समर्पित स्वास्थ्य सेवाएं।
- भिवानी में फूड वैन द्वारा जरूरतमंदों को नियमित भोजन वितरण।
- दर्द निवारक - महाउपयोगी नाकोडा भैरव लाल तेल का देश भर में निःशुल्क वितरण।
- निर्धन विधवाओं एवं असहाय वर्गों को राशन सहायता।
- जीव-दया के संरक्षण एवं करुणा आधारित सेवा अभियान।
- साधर्मी बंधुओं को हर प्रकार की सहायता।

MATUSHRI BHAWAN, 537/5, Doodh Wali Gali, Mehrauli, New Delhi-110030 9717524774 Email.: foundationjpjain@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

संपूर्ण भारतवर्ष में चातुर्मासार्थ विराजमान श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघीय साधु-साध्वियों के सान्निध्य में पर्युषण पर्वों की अभूतपूर्व आराधना।

संवत्सरी महापर्व की हार्दिक क्षमा याचना

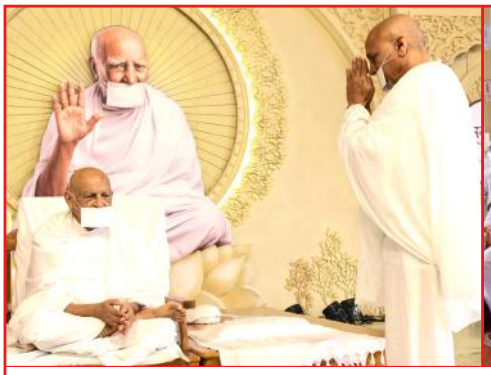

अहिल्यानगर (महाराष्ट्र) में महाराष्ट्र प्रवर्तक पूज्य श्री कुंदनऋषि जी महाराज, उपाध्याय श्री प्रवीणऋषि जी महाराज आदि साधु-साध्वीवृंद के सान्निध्य में

बेंगलुरु (कर्नाटक) प्रवचन प्रभावक डॉ. समकित मुनि जी महाराज आदि ठाणे

देवेंद्र धाम उदयपुर (राजस्थान) में उपाध्याय पू. श्री रमेशमुनि जी म., प्रवर्तक पू. श्री राजेन्द्रमुनि जी म. आदि ठाणा

संवत्सरी महापर्व - विशेष लेखन प्रतियोगिता

संवत्सरी केवल क्षमायाचना का पर्व नहीं, बल्कि आत्मचिंतन, आत्मशुद्धि और धर्म के वास्तविक स्वरूप को अनुभव करने का अवसर है। इसी भावना को केन्द्र में रखते हुए संवत्सरी महापर्व के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय स्तर की विशेष लेखन प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। प्रतिभागी निम्नलिखित विषयों में अपने स्वयं के अनुभवों के आधार पर लेख लिखें-**1.** 'वस्तु का स्वभाव ही धर्म है' अपने जीवन एवं अनुभूतियों के आधार पर इस सिद्धांत की व्याख्या कीजिए। **2.** 'सामायिक ही सर्वश्रेष्ठ साधना है' सामायिक के माध्यम से प्राप्त अपने अनुभवों एवं आत्मिक परिवर्तन के आधार पर इसकी व्याख्या कीजिए। **3.** 'णमोकार ही महामंत्र है' णमोकार मंत्र के जाप, भावना एवं साधना से प्राप्त अपने अनुभवों के आधार पर इसकी महत्ता को स्पष्ट कीजिए।

पुरस्कार : प्रथम पुरस्कार - **51,000/-**, द्वितीय पुरस्कार - **31,000/-**, तृतीय पुरस्कार- **21,000/-**

विशेष अवसर : प्रतियोगिता के विजेताओं के चित्र एवं उनके विजयी लेख/उत्तर 'जैन प्रकाश' में प्रकाशित किए जाएंगे, ताकि उनके अनुभव एवं विचार पूरे समाज तक पहुँच सकें।

अंतिम तिथि : लेख भेजने की अंतिम तिथि - **02** अक्टूबर **2026** है। यह प्रतियोगिता केवल पुरस्कार प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि अपने भीतर झांकने, अपने अनुभवों को शब्द देने और धर्म के वास्तविक स्वरूप को समाज के सामने रखने का अवसर है। आइए, इस संवत्सरी पर केवल क्षमा न माँगें-अपने भीतर के धर्म को पहचानें, अनुभव करें और शब्दों में अभिव्यक्त करें। प्रतियोगिता के पुरस्कार पारितोषित लाभार्थी जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जैन, वसंतकुंज-दिल्ली रहेंगे। लेख जैन कॉन्फ्रेंस के अधिकारिक व्हाट्सऐप नंबर **9019731906** पर भेजें।

- जैन प्रकाश संपादकीय टीम

उधना में धार्मिक, आध्यात्मिक एवं तपस्याओं के साथ चातुर्मास गतिमान

सूरत (गुजरात) : ध्यानयोगी आचार्य भगवान डॉ. शिवमुनि जी महाराज साहब के पावन आशीर्वाद एवं प्रवर्तक पूज्य प्रकाशमुनि जी महाराज साहब तथा गुरुणी श्री आदर्श ज्योति जी महाराज साहब की सुशिष्या, बाल ब्रह्मचारिणी पूज्य चेतना जी महाराज साहब एवं बाल ब्रह्मचारिणी पूज्य महिमा जी महाराज साहब के पावन सान्निध्य में श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, उधना के महावीर भवन में चातुर्मास अत्यंत धार्मिक, आध्यात्मिक एवं तपस्या की भव्य साधना के साथ गतिमान है।

यह चातुर्मास केवल धार्मिक आयोजनों तक सीमित नहीं है, बल्कि कई व्यक्तित्वों के जीवन को नई दिशा देने वाला और युवाओं के जीवन में नई रोशनी जगाने वाला चातुर्मास बनता जा रहा है। विशेष रूप से बड़ी संख्या में युवा धर्म, साधना एवं तपस्या से जुड़ रहे हैं। प्रतिदिन होने वाले धार्मिक एवं आध्यात्मिक प्रवचनों से श्रद्धालुओं को आत्मचिंतन, संयम और आध्यात्मिक जीवन की प्रेरणा मिल रही है। चातुर्मास प्रारंभ होते ही प्रथम सप्ताह में 536 आयम्बिल तप का सुंदर आयोजन हुआ।

प्रेषक : जयन्तीलाल कूकड़ा जैन

श्री जैन संघ कोडम्बाक्कम वड़पलनी चेन्नई संघ द्वारा अन्नदानम्

संघ के सदस्यों के सहयोग से अन्नदान कार्यक्रम किया जाता है और अन्नदानम् का कार्यक्रम हर महीने को अमावस्या के दिन बहुत ही सुंदर ढंग से संपन्न हुआ। श्री जैन संघ कोड़मबाक्कम वड़पलनी की तरफ से लाभार्थी परिवार को बहुत-बहुत धन्यवाद। - महावीरचंद सी. भंडारी जैन

अमृत महामहोत्सव के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रमों में सहभागिता हेतु निम्न QR अभी स्कैन करें।

अहिंसा दूत प्रमाण पत्र	डिजिटल सेल्फी	संकल्प पत्र
अहिंसा रैली-युवा शाखा	अहिंसा रैली - युवा शाखा	बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ महिला शाखा

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

जैन कॉन्फ्रेंस युवा शाखा द्वारा 2 अक्टूबर को देशव्यापी अहिंसा रैली का आयोजन

प्रेषक : अमित कांतिकुमार जैन-राष्ट्रीय युवा महामंत्री, जैन कॉन्फ्रेंस

आज जब हमारा संपूर्ण समाज श्रमण संघ के अमृत महोत्सव वर्ष के पावन, स्वर्णिम और गौरवशाली कालखंड से गुजर रहा है, तब हमारा हृदय अपार आनंद और ऊर्जा से आंदोलित है।

इसी ऐतिहासिक दायित्व को अंगीकार करते हुए, हमारे यशस्वी राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुल जी जैन के कुशल, दूरदर्शी एवं ओजस्वी नेतृत्व में, जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय युवा शाखा एक ऐसे राष्ट्रव्यापी आंदोलन का सूत्रपात करने जा रही है, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए एक मील का पत्थर साबित होगा।

आज हमारा राष्ट्र यदि किसी सबसे बड़े आंतरिक अंधकार से जूझ रहा है, तो वह है युवा पीढ़ी में पैर पसारता नशे और व्यसनों का जाल। नशा केवल शरीर को ही क्षीण नहीं करता, बल्कि यह विचार, संस्कार, परिवार और पूरे राष्ट्र के भविष्य को विदीर्ण कर देता है। जो व्यसन की राह चलेगा, उसका कल निश्चय ही ढलेगा, जो संयम की राह वरेगा, उसका जीवन-कमल खिलेगा। अहिंसा केवल किसी को शारीरिक चोट न पहुँचाने का नाम नहीं है, अपने भीतर के सद्गुणों की रक्षा करना और अपनी काया व आत्मा को व्यसनों से बचाना ही आज के युग की सबसे बड़ी अहिंसा है। इसी विचार-बीज को वटवृक्ष बनाने के लिए यह विशाल रैली आयोजित की जा रही है।

12 राज्यों का महा-संगम : चार जोन, एक प्राण, एक अभियान - यह बताते हुए सीना गर्व से चौड़ा हो जाता है कि कश्मीर के बर्फीले शिखरों से लेकर कन्याकुमारी व तमिलनाडु के नीले समंदर तक, भारत के 12 राज्यों में एक साथ, एक ही समय, लाखों पग अहिंसा और संयम के पथ पर अग्रसर होंगे। इस विशाल संगठन को व्यवस्थित और गतिमान बनाने के लिए हमारी युवा शाखा ने इसे चार प्रमुख जोनों में विभाजित कर युवा नेतृत्व को दायित्व सौंपा है।

जोन 1 (दक्षिण भारत का गौरव) : कर्नाटक प्रांतीय युवा अध्यक्ष श्री आशीष भंसाली, आंध्र प्रदेश व तेलंगाना प्रांतीय युवा अध्यक्ष श्री श्रेनिक राज डाफरिया जैन, तमिलनाडु प्रांतीय युवा अध्यक्ष श्री मनीष रांका जैन, जोन 2 (उत्तर भारत की ऊर्जा) : पंजाब प्रांतीय युवा अध्यक्ष श्री विनय जैन, हरियाणा प्रांतीय युवा अध्यक्ष श्री अंश जैन, उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड प्रांतीय युवा अध्यक्ष श्री पुनीत जैन, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (दिल्ली), जोन 3 (मध्य एवं पूर्व की आभा) : राजस्थान प्रांतीय युवा अध्यक्ष श्री निर्मल सिंघवी जैन, मध्य प्रदेश प्रांतीय युवा अध्यक्ष श्री सुविधि जवेरी जैन, पश्चिम बंगाल, जोन 4 (पश्चिम भारत का शौर्य) : महाराष्ट्र चतुर्थ जोन प्रांतीय युवा अध्यक्ष श्री हितेश कांकरिया जैन, महाराष्ट्र पंचम जोन प्रांतीय युवा अध्यक्ष श्री देवेंद्र पारख जैन, गुजरात प्रांतीय युवा अध्यक्ष श्री कमलेश मादरेचा जैन इन सभी जोनल अध्यक्षों के नेतृत्व में गाँव-गाँव, शहर-शहर ऐसी सांगठनिक तैयारी चल रही है मानो राष्ट्र-जागृति का कोई महा-उत्सव द्वार पर खड़ा हो।

अनुशासन और मर्यादा का प्रतीक : हमारी विशिष्ट पोशाक - जब लाखों लोग सड़कों पर निकलें, तो उनकी एकता और अनुशासन दूर से ही दृष्टिगोचर होना चाहिए। रंगों का हमारे मनोविज्ञान और भारतीय संस्कृति में विशेष महत्व है। इस भव्य दिव्य रैली को दृश्यमान (Visually impact-full) और गरिमामयी बनाने हेतु परिधान निश्चित किए गए हैं। पुरुषों के लिए (श्वेत परिधान - शांति और पवित्रता का प्रतीक) सफेद कुर्ता-पायजामा, सफेद शर्ट-ट्राउजर अथवा सफेद टी-शर्ट। यह श्वेत रंग हमारे संयम, निष्कलंक आचरण और स्थानकवासी परंपरा की निर्मलता को अभिव्यक्त करेगा।

मातृशक्ति एवं बहनों के लिए (रक्त वर्ण - ऊर्जा और मंगल का प्रतीक) लाल साड़ी अथवा लाल सलवार सूट। यह लाल रंग त्याग, शौर्य, वात्सल्य और जीवन में आने वाली हर बुराई को भस्म करने वाली मातृशक्ति की जाग्रत ऊर्जा का परिचायक होगा। सोचिए, जब एक ओर श्वेत परिधान में अनुशासित पुरुष और दूसरी ओर लाल परिधान में मातृशक्ति हाथों में व्यसनमुक्ति और अहिंसा के बैनर लेकर कदमताल करेगी, तो वह दृश्य कितना नयनाभिराम और जनमानस को झकझोरने वाला होगा।

मैं, आपका अपना अमित कांतिकुमार जैन, राष्ट्रीय युवा महामंत्री होने के नाते नहीं, बल्कि आपके परिवार के एक छोटे से सदस्य के रूप में पूरे अधिकार और अंतःकरण की गहराइयों से आप सभी से आह्वान करता हूँ। आगामी 2 अक्टूबर 2026 को अपने-अपने नगरों, कस्बों और महानगरों में सपरिवार, इष्ट-मित्रों के साथ घरों से बाहर निकलिए। अपनी उपस्थिति दर्ज करवाइए। अपने बच्चों को उँगली पकड़कर इस रैली में लाइए, ताकि वे बचपन से ही अहिंसा के मूल्य और व्यसनों से दूर रहने का संकल्प सीख सकें।

अहिंसा रैली हेतु अधिक जानकारी के लिए आप मुझे संपर्क कर सकते है।

अमित कांतिकुमार जैन : 91522 11555 और केंद्रीय कार्यालय जैन भवन नई दिल्ली : 011-4360 1906

स्मृति शेष श्रद्धांजलि

पूज्य श्री ज्योतिधर मुनि जी म. का देवलोक गमन

जैंजो (पंजाब) : संघ संरक्षक बहुश्रुत योगीराज स्वामी श्री फूलचंद जी महाराज के पौत्र शिष्य, धर्म प्रभावक पंडित रत्न श्री जिनेन्द्र मुनि जी महाराज के सुशिष्य ध्यानयोगी पू. श्री ज्योतिधर मुनि जी महाराज का शुक्रवार, दिनांक 11 सितम्बर को देवलोक गमन हो गया।

श्रीमान् चांदमल बनवट जैन का संथारा सहित स्वर्गवास

उधना, सूरत (गुजरात) : सुश्रावक श्री चांदमल बनवट जैन (रायपुर) ने अत्यंत समता, धैर्य और आध्यात्मिक भाव से 9 सितंबर 2026 को दो दिवस का संथारा (संलेखना) पूर्ण किया।

श्रीमती निर्मला जी जैन का स्वर्गवास

करोल बाग, दिल्ली : सुश्राविका श्रीमती निर्मला जैन धर्मपत्नी स्व. श्री सुशील कुमार जैन का 13 सितम्बर को स्वर्गवास हो गया।

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि

इन्दौर : आत्म शुक्ल शिव प्रकाशोत्सव पर 20 सितंबर 2026 रविवार को गौसेवा के शुभ कार्यों का शुभारंभ अनुष्ठान आराधिका डॉ. श्री कुमुदलता जी म. के सान्निध्य मे 7 सितम्बर को प्रवचन सभा के दौरान किया ओर गौसेवा के लिए सभी श्रावक एवं श्राविकाओ को इस सेवा कार्य हेतु आमंत्रित किया। - सौरभ जैन, इंदौर

जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश द्वारा प्रकाशित चातुर्मास सूची 2026 का भव्य विमोचन संपन्न

नई दिल्ली : जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश द्वारा प्रकाशित दिल्ली एवं एन.सी.आर. में विराजमान श्वेतांबर स्थानकवासी समस्त पूज्य संत-साध्वीवृंद की चातुर्मास सूची 2026 पुस्तिका का विमोचन राष्ट्रसंत, उत्तर भारतीय प्रवर्तक पूज्य गुरुदेव श्री सुभद्रमुनि जी महाराज एवं जगतवल्लभ पूज्य गुरुदेव श्री अमितमुनि जी महाराज के पावन सान्निध्य में संपन्न हुआ।

इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस की ज्ञानप्रकाश योजना के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री सुरेश कुमार जैन, दिल्ली प्रांतीय अध्यक्ष श्री जितेंद्र जैन, प्रांतीय कार्यकारी अध्यक्ष श्री राजेश जैन, प्रांतीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अनिल कुमार जैन, प्रांतीय महामंत्री श्री ललित ओसवाल जैन, प्रांतीय संरक्षक श्री महेश जैन, वर्धमान हॉस्पिटल सेक्टर-15 के महामंत्री श्री सतीश जैन, श्री सतदेव जैन, पालम जिला अध्यक्ष सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। इस पुस्तिका में प्रत्येक चातुर्मास स्थल का पूरा पता, उसके नजदीकी मैट्रो स्टेशन का नाम तथा संबंधित पदाधिकारी के मोबाइल नंबर भी सम्मिलित किए गए हैं। प्रेषक : ललित ओसवाल जैन

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

PRGI : DLHIN/25/A4261
Postal Regn. No. DL(ND) 11/6078/2026-27-2028
U(C)-312/2026-28

Date of Publication : 15-09-2026
Date of Posting : 21/22-09-2026
E-mail : aissjc1906@gmail.com

भाषा : हिन्दी ✲ अंक : 27 ✲ पृष्ठ : 8
माह : सितम्बर ✲ सप्ताह : 15 सितम्बर से 21 सितम्बर

मूल्य : ₹ 10

सह-सम्पादक : जसवंत जैन-दिल्ली, पीयूष जैन-इंदौर, गौतम दुग्गड़ जैन-चेन्नई

स्थानकवासी जैन परम्परा के गौरवशाली महापुरुष श्रृंखला...

श्री वीरजी वोरा जैन : सूरत के 'मर्चेंट प्रिंस' और आचार्य लवजी ऋषि जी महाराज के नाना!

- प्रो. डॉ. अमितराय जैन

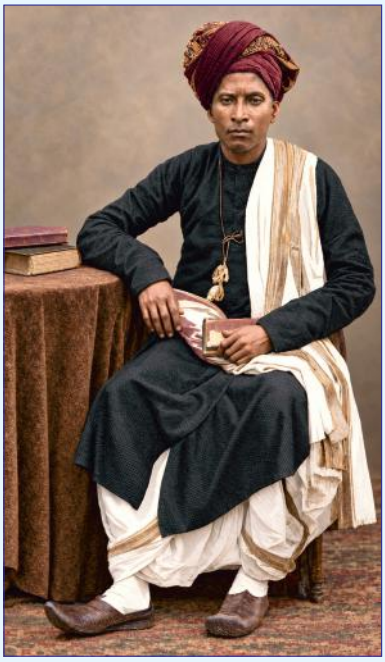

सत्रहवीं शताब्दी का सूरत भारत के समुद्री और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का प्रमुख केंद्र था। इसी सूरत में वीरजी वोरा जैन ऐसे विलक्षण व्यापारी के रूप में प्रतिष्ठित हुए, जिनका प्रभाव मुगलकालीन व्यापार व्यवस्था से लेकर अंग्रेज और डच ईस्ट इंडिया कंपनियों तक दिखाई देता है। ईस्ट इंडिया कंपनी के अभिलेखों में उनका उल्लेख 1619 से मिलता है और लगभग आधी शताब्दी तक वे सूरत के व्यापारिक जगत के प्रमुख व्यक्तित्व बने रहे। समकालीन यूरोपीय विवरणों में उन्हें Merchant Prince तथा अत्यंत धनी व्यापारियों में गिना गया है। उनकी संपत्ति लगभग 80 लाख रुपये आंकी गई थी।

वीरजी वोरा का व्यापार मसाले, अफीम, कपास, काली मिर्च, नील, सोना-चाँदी, मूंगा, हाथीदाँत आदि अनेक वस्तुओं तक विस्तृत था। सूरत के अतिरिक्त आगरा, अहमदाबाद, भरूच, बड़ौदा, बुरहानपुर और अन्य प्रमुख व्यापारिक केंद्रों में उनके एजेंट कार्य करते थे। वे केवल व्यापारी नहीं, बल्कि बड़े साहूकार और ऋणदाता भी थे। अंग्रेज और डच ईस्ट इंडिया कंपनियाँ उनसे व्यापारिक लेन-देन के साथ ऋण भी लेती थी। यही कारण था कि यूरोपीय व्यापारियों के लिए वीरजी वोरा सूरत के सबसे महत्वपूर्ण भारतीय कारोबारी सहयोगियों में थे।

1664 में छत्रपति शिवाजी महाराज के सूरत आक्रमण में स्थानकवासी जैन उपासक वीरजी वोरा को भी भारी आर्थिक क्षति उठानी पड़ी। उनके प्रतिष्ठान और गोदामों को लूटे जाने का उल्लेख समकालीन यूरोपीय विवरणों में मिलता है। किंतु इस विपत्ति के बाद भी उनका व्यापारिक प्रभाव समाप्त नहीं हुआ। यह उनकी विशाल आर्थिक क्षमता का प्रमाण है।

वीरजी वोरा : एक प्रतिष्ठित स्थानकवासी जैन संघवी एवं श्रावक - इतिहास में वीरजी वोरा की पहचान जितनी बड़ी व्यापारी के रूप में है, स्थानकवासी जैन समाज के लिए उनकी पहचान उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है। प्रो. के.एच. कामदार के अभिलेखीय अध्ययन तथा जैन दस्तावेजों के आधार पर उन्हें लोंकागच्छीय-स्थानकवासी जैन परंपरा का प्रतिष्ठित श्रावक एवं संघवी माना गया है।

वीरजी वोरा की एकमात्र पुत्री फूलाबाई थी और उनके पुत्र थे लवजी ऋषि जी महाराज। इस प्रकार महान क्रियोद्धारक आचार्य लवजी ऋषि जी के नाना होने के कारण वीरजी वोरा का स्थान स्थानकवासी जैन इतिहास में विशिष्ट हो जाता है। लवजी ऋषि जी का बाल्यकाल नाना के परिवार में बीता, जहाँ उन्हें जैन धर्म के संस्कार और आगम-अध्ययन का अवसर मिला। आगे चलकर यही बालक सांसारिक वैभव से विरक्त होकर जैन साधु बना।

लवजी ऋषि जी : क्रियोद्धार की उज्ज्वल परंपरा - आचार्य लवजी ऋषि जी महाराज स्थानकवासी जैन परंपरा के उन प्रमुख संतों में हैं, जिन्होंने साधु-जीवन में आगमसम्मत आचार, संयम और शुद्ध धार्मिक मर्यादा के पुनरुत्थान के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया। जैन इतिहास में उन्हें क्रियोद्धारक परंपरा के प्रमुख आचार्यों में स्थान प्राप्त है। उनके जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ तब आया, जब तत्कालीन साधु-परंपरा के आचार-विचार को लेकर उनके भीतर स्वतंत्र चिंतन विकसित हुआ। उपलब्ध परंपरागत स्रोतों के अनुसार वि.सं. 1692 में वे अपने पूर्व गुरु-सम्प्रदाय से अलग हुए। इसके बाद उनके जीवन का प्रमुख उद्देश्य साधु-आचार की शुद्धता और धर्म की मूल मर्यादाओं की पुनः प्रतिष्ठा बन गया।

नाना-नाती और खंभात का प्रसंग - पूज्य आचार्य श्री लवजी ऋषि जी के जीवन से जुड़ा खंभात का प्रसंग वीरजी वोरा और उनके संबंध को विशेष ऐतिहासिक महत्व देता है। जैन परंपरागत साहित्य में उल्लेख है कि आचार्य श्री लवजी ऋषि जी के स्वतंत्र धार्मिक विचारों की सूचना मिलने पर वीरजी वोरा ने खंभात के नवाब को पत्र लिखा। श्रीमानु लोंकाशाह में यह प्रसंग 'वीरजी बोहरा का नबाब पर कागद' शीर्षक से मिलता है। परंपरागत विवरण के अनुसार, नवाब ने लवजी ऋषि जी को कुछ समय के लिए बंदी रखा। किंतु वे अपने सिद्धांतों और साधु-धर्म से विचलित नहीं हुए। आगे चलकर उनकी तपस्या, निर्भीकता और धर्मनिष्ठा से वीरजी वोरा स्वयं प्रभावित हुए और उनके प्रति श्रद्धावान बने। इस प्रकार नाना-नाती का संबंध अंततः आध्यात्मिक श्रद्धा और सहयोग में परिवर्तित हुआ।

यही प्रसंग वीरजी वोरा के व्यक्तित्व का सबसे मार्मिक पक्ष सामने लाता है-जिस नाती के वैराग्य और धार्मिक स्वतंत्रता को लेकर कभी मतभेद उत्पन्न हुए, उसी की आध्यात्मिक दृढ़ता ने अंततः नाना को प्रभावित किया।

धन से बड़ी विरासत - वीरजी वोरा ने अपने समय में व्यापार

और वित्त के क्षेत्र में ऐसी प्रतिष्ठा अर्जित की, जिसकी चर्चा अंग्रेजी, डच और अन्य यूरोपीय स्रोतों में मिलती है। किंतु स्थानकवासी जैन समाज के लिए उनकी सबसे स्थायी पहचान उनकी संपत्ति नहीं, बल्कि जैन धर्म से उनका गहरा संबंध और आचार्य लवजी ऋषि जी महाराज से उनका गौरवपूर्ण नाना-नाती संबंध है।

एक ओर सूरत का यह जैन संघवी अपने युग के सबसे प्रभावशाली व्यापारियों में था, दूसरी ओर उसी परिवार में संस्कारित लवजी ऋषि जी ने संसार का वैभव त्यागकर साधु-जीवन और धर्म के क्रियोद्धार को अपना जीवन समर्पित किया।

इस दृष्टि से वीरजी वोरा और आचार्य लवजी ऋषि जी की कथा स्थानकवासी जैन परंपरा में श्रावक-शक्ति और साधु-शक्ति के अद्भुत समन्वय की कथा है। वीरजी वोरा का आर्थिक वैभव इतिहास की धरोहर है, किंतु लवजी ऋषि जी जैसे महान क्रियोद्धारक संत के नाना के रूप में उनका स्थान स्थानकवासी जैन समाज की धार्मिक-सांस्कृतिक स्मृति में सदैव विशिष्ट रहेगा।

शोध-संदर्भ :

1. K. H. Kamdar, Virji Vorah, Surat Millionaire Mahajan - बॉम्बे आर्काइव्स तथा सूरत-बड़ौदा के जैन दस्तावेजों पर आधारित अध्ययन।

2. Surendra Gopal, Economic Life of Jains in Medieval Times - मध्यकालीन जैन व्यापारियों तथा वीरजी वोरा के आर्थिक प्रभाव पर आधारित शोध।

3. सागरमल जैन स्थानकवासी जैन परंपरा का इतिहास - लवजी ऋषि जी, उनके पारिवारिक संबंध तथा क्रियोद्धार परंपरा के संदर्भ।

4. श्रीमानु लोंकाशाह - 'वीरजी बोहरा का नबाब पर कागद' सहित लवजी ऋषि जी से संबंधित परंपरागत प्रसंग।

5. जैन आचार्य चरितावली - लवजी ऋषि जी के जीवन, खंभात प्रसंग तथा उनके धार्मिक व्यक्तित्व से संबंधित विवरण।

(शहजाद राय शोध संस्थान में संग्रहित शोध सामग्री के आधार पर)

प्रेस्टीज

प्रतिबद्ध है भारत को समृद्ध एवं प्रबुद्ध बनाने के लिये अपने सर्वश्रेष्ठ सोया प्रोटीन सोया तेल, वनस्पति, सोया बड़ी गेहूँ का आटा मैदा, रवा, सूजी और उत्कृष्ट शिक्षा K.G. से Ph.D. के द्वारा भारत को जरूरत है स्वर्ण पदकों की ओलम्पिक और नोबल पुरस्कार विजेताओं की

स्वस्थ व प्रबुद्ध भारत के लिये
प्रेस्टीज सोया खाद्य और समग्र शिक्षा
बेहतर भोजन - बेहतर शिक्षा - बेहतर राष्ट्र

प्रेस्टीज फूड्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (अंडर ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज फीड मिल्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (पोस्ट ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज सोया इंडस्ट्रीज	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, ग्वालियर
प्रेस्टीज फ्रोटेक लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, देवास
प्रेस्टीज फीड मिल्स	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड साइंस, इंदौर
प्रेस्टीज फैब्रिकेटर्स प्रा. लिमिटेड	प्रेस्टीज पब्लिक स्कूल, इंदौर

प्रेस्टीज ग्रुप ऑफ इन्डस्ट्रीज एंड इंस्टीट्यूट्स

स्टार एक्सपोर्ट हाउस (भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त) आई.एस.ओ. : 9000 2001 प्रमाणिक ग्रुप

30, Jaora Compound, M.Y.H. Road, Indore - 452001, M.P.
Phone.: 0731-4011111, 4041111 Fax: 4011107, 2704455 E-mail: info@prestigeindia.com Website: prestigeindia.com

सम्पादकीय अस्वीकरण : 'जैन प्रकाश' में प्रकाशित समाचार, लेख एवं विचार संबंधित लेखकों/समाचार प्रेषकों/अन्य स्रोतों के निजी विचार हैं। उनकी सत्यता एवं प्रामाणिकता के लिए वही उत्तरदायी होंगे। संपादक एवं प्रकाशक किसी भी त्रुटि, मानहानि या विवाद के लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। यह प्रकाशन भारतीय प्रेस एवं पंजीकरण अधिनियम, 1867 तथा लागू भारतीय कानूनों के अंतर्गत है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा। - डॉ. अमित जैन (सम्पादक/प्रकाशक)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक एवं प्रकाशक अमित जैन द्वारा मुद्रक पारस ऑफसेट प्रा.लि., 118-F, सेक्टर 56, फेज 5, कुंडली इंडस्ट्रियल स्टेट, सोनीपत - 131 028 द्वारा मुद्रित।
केन्द्रीय कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110 001 से प्रकाशित ✲ सम्पर्क : 90197 31906